पूर्व समीक्षित
(पीयर रिव्यूड) पत्रिका

प्राप्य

विचार, साहित्य और कला की पत्रिका

वर्ष : 47, अंक : 8, पूर्णांक : 190

रतन थियाम

(20 जनवरी 1948 - 23 जुलाई 2025)

आर्यकल्प

विचार, साहित्य और कला की पूर्व समीक्षित पत्रिका

वर्ष : 47 अगस्त 2025 (पूर्णांक-190) अंक-8

परामर्शदाता मण्डल

किरन बर्मन

विनोद शाही

तरसेम गुजराल

वी. रविन्द्रन

सम्पादक

लोलार्क द्विवेदी

सह-सम्पादक

विपुल कुमार

सम्पादन सहयोग

राजीव रंजन प्रसाद

एस.के. साबिरा

एक प्रति : रु. 40/-सदस्यता (4 अंक) रु. 160/- रजिस्टर्ड डाक शुल्क अतिरिक्त
संस्थाओं के लिए (4 अंक) रु. 300/-
सहयोग राशि : न्यूनतम रु. 1000/-
सभी चेक, मनीऑर्डर एवं बैंक ड्रॉफ्ट **आर्यभाषा संस्थान** के नाम भेजें।

सम्पादकीय कार्यालय : बी. 2/143-ए, भदैनी, वाराणसी-221001

मो0नं0 09839575796, E-mail : aryakalp@yahoo.com

अनुक्रम

पृ.सं.		
3	**सम्पादकीय** : मेरे क्षितिज उदार बनो	
	स्मृतिपाठ	
6	श्याम बेनेगल : श्वेतश्याम स्पर्श की प्रतिसंवेदना	गौतम चटर्जी
	साक्षात्कार	
15	हमारे युग के नेता गांधी हैं और रहेंगे : विश्वनाथ त्रिपाठी	बिपिन तिवारी अटल तिवारी
	अनहदनाद	
27	मार्क्सवाद और भारतीय यथार्थवाद : एक पुनर्विचार	तरसेम गुजराल
	स्मरण	
36	काम और नाम दोनों गुमनाम	योगेन्द्र नारायण
	बुकर पुरस्कार	
40	हे प्रभु! तुम एक बार स्त्री बनना	रंजना अरगडे
	31 जुलाई पर विशेष	
45	'जागरण' हिंदी साप्ताहिक पत्र	कृष्णवीर सिंह सिकरवार
	कहानी	
53	धोबीपाट	सुशांत सुप्रिय
76	ढीठ	इला सिंह
80	माँ-बेटे	पूजा गुप्ता
	कविता	
59	अशोक सिंह की कविताएँ	
70	राकेश भारतीय की कविताएँ	
85	अनीता नंदवाना 'अनु' की दो कविताएँ	
	ग़ज़ल	
67	विनय मिश्र की चार ग़ज़लें	
	नीलकांत स्मृति	
88	जीवट चेतना का राग-रंग	उमाशंकर सिंह परमार
	पुस्तक समीक्षा	
99	रंग बारिश : सधे हुए शिल्प में बेहतरीन ग़ज़लें	(सुश्री) शरद सिंह
103	मुग़ल औरतों के बारे में आप कितना जानते हैं?	ज़ाहिद ख़ान
	पत्रिका-समीक्षा	
109	आर्यकल्प : जानकी प्रसाद शर्मा पर विशिष्ट अंक	हीरालाल नागर

ISBN : 978-81-87978-35-0

साक्षात्कार

हमारे युग के नेता गांधी हैं और रहेंगेः विश्वनाथ त्रिपाठी

(वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी से बिपिन तिवारी और अटल तिवारी की बतकही)

पंडित जवाहर लाल नेहरू के बारे में जब आज आप सोचते हैं तो कौन से प्रसंग याद आते हैं?

देखिए, मैं नहीं जानता कि यह विशेषता भारतवर्ष की है या यह हिंदी समाज की ही है। लेकिन एक चीज मुझे अजीब दिखाई पड़ती है। मैं स्वतंत्रता आंदोलन को हमेशा भक्ति आंदोलन से जोड़ता हूँ। यह आज तक मेरे लिए रहस्य और रोमांच है कि भारत में भक्ति आंदोलन का प्रचार किस प्रक्रिया से हुआ? मैं तो नहीं कर पाया, लेकिन अगर समय मिलता तो मैं इस पर रिसर्च अवश्य करता। इस सिलसिले में नेहरू वाला सवाल मुझे याद आता है। मैं 1931 ईसवी में पैदा हुआ। 1934-35 तक मुझे होश-हवास आने लगा था। उस दौर में मेरे गांव में हिंदी का एक ही अखबार आता था 'आज', जो बनारस से निकलता था। उस अखबार को गांव के अधिकांश लोग पढ़ते थे। नेहरू और गांधी का नाम अखबार में तो आता ही था परंतु मेरी मां और मेरी नानी जो गीत गाती थीं उनमें भी गांधी-नेहरू और भगत सिंह का नाम होता था। वह कौन सी प्रक्रिया है, जिसके कारण गांधी, नेहरू और भगत सिंह का नाम बिजली के तार की तरह गांव-गांव और गली-गली में फैल गया। आज तो कम्युनिकेशन के इतने साधन हैं। इससे मुझे कुछ सूत्र मिलते हैं। शायद भक्ति आंदोलन इसी तरीके से भारत में फैला होगा। यह जो मेले-ठेले हैं। पर्व और त्योहार हैं। ये भी भक्ति का प्रचार-प्रसार करते थे। गांव में एकादशी व्रत होता है, जो है तो घोर संस्कारी, लेकिन उस एकादशी व्रत में भी गांधी और नेहरू पता नहीं कैसे जुड़ गए। वह कौन सी जादुई शक्ति है जिसमें हिंदुस्तान का पिछड़े से पिछड़ा आदमी जैसे हमारे यहां जो बहादुर मोती थे, जिनको कोई नहीं छूता था लेकिन वह भी गांधी जी का नाम लेते थे। ऊपर की जो विषमताएं हैं, असंगतियां हैं, भेदभाव हैं, उनसे ऊपर उठकर गांधी का नाम लेते थे। इस प्रक्रिया को मैं आज तक नहीं जान पाया। लेकिन यह मुझे बहुत आकृष्ट करती है। बचपन में मैं चार-पांच साल का रहा हूँगा तो मेरी मां 'चरखवा चालू रहै' गाना गाती थीं। गीत में भी गांधी-नेहरू आते थे। वैसे तो वह अशिक्षित थीं।

'मोरे चरखे का टूटइ न तार,
चरखवा चालू रहै।
दुलहा बनिके गांधी जी चलिबे,
दुलहिन बनी सरकार।
चरखवा चालू रहै।
वीर जवाहर बने सहबाला,
इरविन बने उनके सार,
चरखवा चालू रहै।
सब वालंटियर बनिगे बराती,
नउवा बने थानेदार।
गांधी जी बइठे मन माँ मगन हुइ,
दइजे माँ माँगइ स्वराज,
चरखवा चालू रहै।
सारे इरिवन लागे मनावइ,
"गउने माँ देहइँ स्वराज",
चरखवा चालू रहै।
पंडित मौलबी साइति सोधइँ,
गउने के दिनवा कुवाँर,
चरखवा चालू रहै।'

बाद में हमें पता चला कि यह गीत अवधी कवि पंडित वंशीधर शुक्ल का है। वह बड़े गजब आदमी थे। तुम्हारे लखीमपुर खीरी के रहने वाले थे। उन्होंने अवधी में बेहतरीन कविताएं लिखी हैं। आजादी के बाद वह विधायक भी रहे। हां, तो मैं कह रहा था कि वह लॉर्ड इरविन जो थे उनको गांव में लाट इरविन कहते थे। अरबो लाट जो हैं वह गांधी जी से मनुहार कर रहे हैं। दुलहा को मना रहे हैं कि बासी खा लो। गांव-गांव में गांधी-नेहरू का नाम बड़े-छोटे सब लोग लेते थे। मेरे घर की बगल में एक कसेरिन दाई रहती थीं। कसेर जानते हैं, कांसा बनाने वाले। जैसे ठठेर होते हैं, पीतल बनाने वाले। लहेर होते हैं, लाख बनाने वाले। यह सब थे हमारे गांव में। मेरा पालन पोषण बचपन से ही कसेरिन दाई के यहाँ हुआ। उसका एक कारण था कि जब मैं दो साल का था तभी मेरा छोटा भाई आ गया था। तो मां मुझे अपने पास नहीं रखती थीं। कसेरिन दाई तो बिल्कुल अपढ़ थीं। किसी से कोई मतलब नहीं। लेकिन जहां हम बैठकर अलाव तापते थे वहां ऊपर एक गांधी जी की फोटो लगी होती थी। दाहिने हाथ से ठुड्डी पकड़े हुए मुद्रा में। कसेरिन दाई हमसे कहती थीं कि यह गांधी बाबा हैं। और यह भी कहतीं कि सरकार इनको पकड़ लेती है लेकिन गांधी बाबा जेल

से बाहर निकल आते हैं। कसेरिन दाई कहतीं इस बार नीम के पेड़ पर कपास उगा हुआ है, क्योंकि खादी कपास से बनता है। इस तरीके से पता नहीं कितने मिथ और कितनी किंवदंतियां थीं, लेकिन यह जो मिथ और किंवदंतियां होती हैं, उनका किताबी ढंग से जैसा अध्ययन होता है वैसी नहीं होतीं। वह रियल स्टोरी से ज्यादा रियल और प्रभावशाली होती हैं। जितना प्रभावशाली मिथक होता है उतनी प्रभावशाली दैनंदिन घटनाएं सचमुच में नहीं होतीं।

हमारे गांव के पचास-सौ मील के आसपास कोई ट्रेन नहीं थी। चार महीने तक गांव का संपर्क बंद रहता था। नदी-नाले, भंवरे आ जाते थे। कोई आता-जाता नहीं था। लेकिन तब भी वहां गांधी और नेहरू के प्रभाव का इतना असर था। गांव में आर्य समाज तो था और एक व्यक्ति कांग्रेसी भी थे, जो झंडा लेकर चलते थे। बारी थे, पान बनाने वाले। लेकिन एक बात बड़ी अजीब थी। जब वह कांग्रेस का झंडा लेकर चलते थे तो उनको साधु लोग मारते थे। हमने देखा कि गांव में नागा बाबा आए हुए थे। उन्होंने जैसे देखा कि कोई कांग्रेस का झंडा लेकर जा रहा है तो उसको मारते थे। इसके बावजूद कांग्रेस के कार्यक्रमों में भीड़ होती थी। लोग कांग्रेस नेताओं की सुनते थे। कार्य करते थे और डरते भी थे। लेकिन मीटिंगों में आते जाते थे। मैंने जबसे होश संभाला तभी से गांव में इस तरीके से गांधी और नेहरू का नाम था। अब गांधी की जो किंवदंतियां हैं उनका कोई अंत नहीं है। लेकिन एक बात बड़ी अजीब थी गांधी में। गांधी का जितना बड़ा अहिंसक रूप, उतना ही बड़ा निर्भीक रूप। इन दोनों-अहिंसा और निर्भीकता-में से कौन सा अंश ज्यादा था, इसका पता लगाना बड़ा मुश्किल है। गांधी जी की जो पोशाक थी वह उनको संतों से मिलाती थी। देखिए, यह बहुत बड़ी स्ट्रेटजी भी हो सकती है। लेकिन यह खाली स्ट्रेटजी से नहीं आ सकती। उर्दू में इसे 'इलहाम' कहते हैं। इसे अंदर की प्रेरणा नहीं कहा जा सकता। बल्कि यह आत्म चेतना होती है। गांधी अपने आप ही संतों की बिरादरी में आते थे। वैसे ही कपड़े, वैसा ही खाना-पीना, वैसे ही रहना, वैसे ही बोलना, वैसी ही अहिंसा और वैसी ही निर्भीकता। आंदोलन में डरना किसी से नहीं। सच्चा गुरु, जो शाहों का शाह है। सबसे बड़ा है। सामने जो ब्रिटिश शासन है, उसका विरोध और उसकी यानी ईश्वर की गुलामी। गांधी बिलकुल संतों की तरह दिखते हैं।

गांधी-नेहरू के बारे में जो किंवदंतियां थीं वह तो थीं, लेकिन कुछ उनके जीवन की ऐसी घटनाएं भी थीं। सबके बारे में सब तरह की किंवदंतियां नहीं बन सकतीं। एक घटना मैं गांधी जी के जीवन की सुनाऊंगा। इस घटना को कम लोग जानते हैं। मुझे गुरुवर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सुनाई थी। यह जमाना रहा होगा 1916-17 का। इस तारीख में कुछ अंतर भी हो सकता है। गांधी जी साउथ अफ्रीका में काम करके यश कमा चुके थे। इसके बाद वह इंडिया आए थे। उस समय इंडिया के बड़े नेता सर

तेजबहादुर सप्रू, लाला लाजपतराय आदि थे। गांधी आ गए थे, लेकिन नए थे। चरखा कातते थे। कलकत्ता में उन दिनों मेरे ख्याल से लॉर्ड चेम्सफोर्ड रहे होंगे। मामला यह था कि दिल्ली में कार्डियल एटमास्फियर में सर तेजबहादुर सप्रू, लाला लाजपतराय आदि लोग उससे बातचीत करेंगे। गांधी भी उसमें रहेंगे। गांधी उस समय नेता नहीं थे। हालांकि इन सबके साथ गांधी जी बैठते थे। जब लॉर्ड चेम्सफोर्ड कलकत्ता से चला तो रास्ते में किसी ने बम रख दिया। उसको खबर मिल गई कि बम रखा गया है। वह वहां से हटकर आया। तब तक दिल्ली में बैठे इन लोगों को बम के बारे में कुछ नहीं पता था। जब यह लोग बातचीत करने के लिए इकट्ठा हुए तो वह गुस्से में चूर। यह सब लोग सर तेजबहादुर सप्रू, लाला लाजपत राय, गांधी आदि बैठे हुए थे। ये लोग एक से बढ़कर एक कानून के जानकार थे। इन लोगों ने उस अंग्रेज अधिकारी से बातचीत के कई सारे प्वाइंट्स निकाले थे। डोमेनियन स्टेट्स पाने के लिए क्या नहीं करेंगे। बताते हैं कि उसने आते ही कहा 'नाउ व्हाट यू हैव टू से। यू इंडियंस, यू इनवाइट मी फॉर टॉक एंड यू एक्सप्लोर बम्स।' 'नाउ व्हाट यू हैव टू से?' कहते हैं कि इन लोगों ने जब उसका यह तेवर देखा। तो सब चुप। यह तो समझते थे कि पीजेंटरी को लेकर बात होगी। वह बार-बार बोले 'व्हाट यू हैव टू से' 'यू चीट इंडियंस।' जब उसने तीन-चार बार कहा और कोई नहीं बोला। गांधी जी पीछे बैठे चरखा चला रहे थे। चरखा चलाते हुए बोले 'लॉर्ड चेम्सफोर्ड, यू हैव टू से ह्वेन यू आर गोइंग टू क्विट इंडिया। यू आर आक्यूपाइंग इंडिया इलीगली। यू हैव टू क्विट, यू हैव टू गो। यू हैव टू से ह्वेन यू आर लिविंग इंडिया।' बताते हैं कि जब गांधी यह बोले तो वह डाउन पड़ा। जब मीटिंग खत्म हुई तो इसके बाद यह जो बड़े बड़े लीगल माइंड थे उन सबने कहा, 'गांधी यू आर मैन ऑफ डिस्टिंग्विश।' हम मैन ऑफ डिस्टिंग्विश नहीं हैं।

मेरे कहने का मतलब है कि यह जो हर देश में होगी और हमारे देश में भी थी। हमारे देश की यह भक्ति परंपरा से जुड़ती है। और यह अकारण नहीं है। गांधी अपने मन से सहज थे। सहज रूप से उनके अंदर अहिंसा और सत्य का विचार था। गांधी ने अपनी सेक्सुअल हैबिट्स के बारे में भी सहज रूप से कहा है। उन्होंने अपनी वाइफ के बारे में कहा कि 'शी वाज नेवर फेड इन माई माइंड।' इतनी सच्ची बात में कन्फेशन्स। सच्ची बात बोलना। इतने सहज रूप में रहना और यह निर्भीकता। अब यह निर्भीकता कहने में तो बड़ी आसान है, लेकिन इसकी बड़ी कीमत गांधी को चुकानी पड़ी। तीस जनवरी को जो हुआ, मैं कहूंगा कि वह होना ही था। उसका एक तर्क है। मैं नहीं जानता कि उस तर्क को यहां कहना ठीक होगा कि नहीं, लेकिन वह एक ऐसी चीज है जो मेरे मन में इन दिनों बहुत कौंध रही है। जब कोई आदमी हिंसा को रोकने की कोशिश करता है तो हिंसक बहुत नाराज हो जाते हैं। आपको याद है कि 1962 के आसपास जॉन एफ कैनेडी अमेरिका का प्रेसिडेंट था। हुआ यह

था कि सोवियत यूनियन से न्यूक्लियर एनर्जी से लैस जहाज क्यूबा की सहायता करने के लिए चल पड़ा था। क्यूबा कम्युनिस्ट हो गया था। कैनेडी ने कहा था कि हम जहाज को आने नहीं देंगे। बम से उड़ा देंगे। उस समय बताते हैं कि ठीक बारह बजे रात को कैनेडी को राय दी गई। व्हाइट हाउस सिचुएशन रूम के हेड ने कहा कि एक घंटे के समय में बिना किसी को कहे सोवियत यूनियन के जो न्यूक्लियर प्लांट्स हैं उन्हें उड़ा दिया जाये। हम हमेशा के लिए विजय प्राप्त कर लेंगे। बताते हैं कि कैनेडी नहीं माना। यह आज तक पता नहीं चला कि कैनेडी को कैसे मारा गया। अपने यहां देखिए, कारगिल लड़ाई जब हो रही थी तो कारगिल लड़ाई में पाकिस्तानी पीछे हट रहे थे। एक आवाज उठी थी कि लाहौर तक पहुंच जाना है। ले लेना है। अटल जी ने कहा, नो। उसके बाद अटल जी की सारी चमक ही खत्म कर दी गई। पता नहीं क्या हुआ। नवाबजादा लियाकत अली खान-नेहरु पैक्ट हुआ। नवाबजादा लियाकत अली खान, पैक्ट हो जाने के कुछ देर बाद मार डाला गया। पता नहीं किसने उसको मार डाला। क्योंकि इन लड़ाइयों में हथियारों के दाम मार्केट में बहुत महंगे हो जाते हैं। हमें तो लगता है विश्व युद्ध है। लेकिन असली कहानी कुछ और होती है। उस समय पूरे देश में जोश आता है-खरीदो माल। उस समय अगर कोई कह दे कि खरीदा गया माल महंगा है, उसको लोग राष्ट्रद्रोही कहकर मार डालेंगे। जो शांति की बात करता है वह जरूर मारा जाता है। जैसे गणेशशंकर विद्यार्थी, गांधी। मुसलमान ऐसी बात कहेंगे तो वे भी मार दिए जाएंगे। दुनिया भर में ऐसे लोग मारे गए। इन सबके ऊपर गांधी। गांधी की सबसे बड़ी शक्ति है। उनकी सहजता। अगर आपने कभी गांधी की एक बच्चे को खिलाते हुए फोटो देखी हो। उस फोटो को देखकर ऐसा लगता है कि गांधी अपना मुंह उस बच्चे की नाक में घुसेड़ देंगे। वह गांधी, असली गांधी है। असली मनुष्य वह है। उसके सामने सब फेल हैं। कहीं कुछ नहीं होता। एक और चीज मैं गांधी के बारे में कह दूं कि हर देश के लिए शताब्दियों में ऐसा नेता पैदा होता है। अब कई सदियों तक भारत को किसी और नेता की जरूरत नहीं है। चाहे अच्छा हो, चाहे बुरा हो। जैसे चीन के लिए माओ नेता है। अब कोई दूसरा नेता नहीं पैदा होगा। वही रहेगा। अपने युग का एक नेता होता है। हमारे युग के नेता गांधी हैं। अब हमें नए नेता की जरूरत नहीं है। इन्हीं के बताए रास्ते पर हम चलें तो बड़ी गनीमत है। नहीं तो कोई बात ही नहीं। गांधी जी ऐसा व्यक्तित्व हैं। नेहरू जी की दूसरी बात है।

कहा जाता है कि गांधी जी तो देवता थे। सब उनका कहना मानते थे॥ नेहरू के प्रति लोगों के मन में प्रेम था। गांधी और नेहरू में एक बात समान जरूर थी कि गांधी और नेहरू दोनों को सांप्रदायिक लोग हेट करते थे। मेरा खयाल है कि गांधी को ज्यादा हेट करते थे, क्योंकि सांप्रदायिकता के असली दुश्मन गांधी थे।

यह सांप्रदायिक लोग पहचानते थे कि असल सेकुलर सचमुच में कौन है। खतरा किस आदमी से ज्यादा है। इसीलिए उन्होंने गांधी को मारा। जबकि सोशलिज्म-सेकुलरिज्म की बात तो नेहरू करते थे। गांधी तो एक तरीके से पूजे जाते थे। नेहरू पूजे नहीं जाते थे। नेहरू का सांप्रदायिक लोग विरोध भी बहुत करते थे। लेकिन नेहरू जमीनी आदमी थे। राजनीति के आदमी थे। पार्टी के आदमी थे। पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी में विश्वास करने वाले आदमी थे। गांधी ने कभी पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी वगैरा के बारे में बात नहीं की। लेकिन नेहरू समझते थे कि नेता हमारे गांधी हैं। नेहरू के कुछ गुण यह हैं कि एक तो नेहरू परिवार के लोगों को और नेहरू जी को कभी पब्लिकली रोते किसी ने नहीं देखा। सिर्फ एक बार जब वह संगम में गांधी की अस्थियां विसर्जित कर रहे थे तब उनको रोना आया है। नेहरू ने हमेशा कहा कि 'आई एम फांड ऑफ गुड थिंग्स इन लाइफ।' नेहरू को भारतीय संस्कृति और भारतीय सभ्यता की समझ बहुत गहरी थी। वह कभी-कभी इस रूप में प्रकट होती थी। वह बताते थे कि मेरे जो बहनोई हैं आर.एस. पंडित उन्होंने कल्हण की 'राज तरंगिणी' का अंगेजी में अनुवाद किया है। उनके समय में जो चीजों का नामकरण किया गया है, जो नए-नए नाम दिए गए हैं, कभी कभी मैं देखता हूं तो बड़ा अजीब लगता है, जैसे-लोकसभा, सभापति, विधानसभा, अध्यक्ष, गणतंत्र। कितने बढ़िया नाम हैं। सत्यमेव जयते जैसे नारे लोकप्रिय हुए। रिजर्व बैंक के सामने यक्ष की मूर्ति रखना एक तरह से भारतीय संस्कृति का काशन करना है। नेहरू के समय में इंस्टिट्यूशन्स के नाम बदले गए। नए नाम दिए गए। कार्यक्रम, परिवार नियोजन, योजना आयोग। अब तो कितना कुछ संस्कृत और हिंदी का बदल दिया गया है। कैबिनेट मंत्रियों के नाम और विभागों के नाम देखिए। उस समय यदि भाजपा के लोग होते तो सब चौपट करके रख देते। अकादमिक संस्थाओं के नाम साहित्य अकादमी, ललित कला अकादमी, संगीत नाटक अकादमी। इस तरह से कितना कुछ किया गया है। एक ओर ये लोग हैं और एक ओर वे लोग थे। फैज़ अहमद फैज़ जब हिंदुस्तान आते थे तो कई बार नेहरू जी के यहां मुशायरा होता था। नेहरू की फ़िराक़ गोरखपुरी साहब से अच्छी पटती थी। साहित्य अकादमी की स्थापना के साथ नेहरू उसके पहले अध्यक्ष बने थे तो उस समय उन्होंने पहला खत साहित्य अकादमी के सचिव को लिखा था। लिखा कि निराला को हर महीने पैसा दिया जाए। बालकृष्ण शर्मा नवीन, मैथिलीशरण गुप्त, फैज़ अहमद फैज़, जोश मलीहाबादी और दक्षिण भारत के अनेक लेखक नेहरू जी के मित्र थे। सब वहां आते थे। नेहरू का साहित्य और संस्कृति से बहुत गहरा संबंध था। संगीत अकादमी जब खुली तो अकादमी के नाम पर कितनी बहस हुई। इतिहास से जुड़ी संस्थाओं के बारे में भी नेहरू का दृष्टिकोण बहुत आगे का था। उनका सांस्कृतिक व्यक्तित्व बहुत ऊंचा है। यह केवल हिंदी या

उर्दू के लिए ही नहीं उनको तो पूरे देश को देखना होता था। करना होता था।

पंडित नेहरू के जोश साहब के साथ संबंध कैसे थे?

जोश मलीहाबादी के साथ नेहरू की बहुत अच्छी पटरी बैठती थी, लेकिन जोश साहब जब पाकिस्तान चले गए तो उनको धक्का लगा। जोश मलीहाबादी ने अपनी आत्मकथा 'यादों की बरात' में लिखा है। कहीं-कहीं जोश जरूरत से ज्यादा अनौपचारिक हो गए हैं। नेहरू जी के यहां उनका आना जाना काफी था। अब उसको कैसे कहा जाए। जोश ने लिखा है कि एक बार मैं नेहरू जी से मिलने गया। नेहरू जी मुझसे मिलने के लिए बाहर आ रहे थे, लेकिन हमें देखकर पता नहीं क्यों लौट गए। नेहरू जी काफी देर बाद जब लौटे तो जोश ने नेहरू जी से पूछा, हमें देखकर लौट क्यों गए? उन्होंने कहा कि मुझे पेशाब लग गई थी। देखकर इधर से उधर चला गया था। जोश मलीहाबादी की शख्सियत ऐसी थी। वह बहुत मुंहलगे थे सबके। बोल देते थे। इसी तरीके से उन्होंने गिरिजा शंकर वाजपेई के बारे में लिखा था। वह गवर्नर हो गए थे। मेरा खयाल है कि मैं नाम ठीक ही ले रहा हूं। या कुछ और नाम रहा हो। जोश उनसे मिलने गए। उस समय वह सो रहे थे। जोश साहब ने उनके पीए से कहा कि उनसे कह दीजिए कि जोश आए हैं तो बुरा नहीं मानेंगे। पीए ने कहा, उन्होंने यह भी कह दिया है कि कोई ऐसा भी आए तब भी मना कर दीजिएगा। बता देना सो रहा हूं इस समय, नहीं मिल सकता। जब वह जगे तब जोश से भेंट हुई। उन्होंने पूछा, जोश साहब इधर कैसे आना हुआ? जोश बोले-कुछ नहीं, मैं नरगिस से मिलने आया था। वह नहीं मिली, तो मैं आपके यहां चला आया। जोश मलीहाबादी ने अपनी आत्मकथा में ऐसी बहुत सी चीजें तरीके से लिखी हैं।

फ़िराक़ गोरखपुरी के साथ कैसे संबंध थे?

फ़िराक़ साहब मूलतः नेहरू के दोस्त थे। नेहरू के साथ जेल में लंबे समय तक साथ रहे थे। कहते हैं कि फ़िराक़ साहब को जब साहित्य अकादमी अवार्ड मिला तो उन दिनों नेहरू ही साहित्य अकादमी अवार्ड दिया करते थे। क्योंकि वही साहित्य अकादमी के अध्यक्ष थे। साहित्य अकादमी अवार्ड देते हुए नेहरू ने कहा, आप इतने बड़े शायर हो गए, हमें पता ही नहीं चला।

फ़िराक़ साहब ने नेहरू के बारे में एक जगह लिखा है, एक बार मैं उनके यहां मिलने गया तो मैंने अपना नाम आर. सहाय लिखकर भेज दिया। बड़ी देर हो गई नेहरू जी ने बुलाया ही नहीं। तो मैं खीझ कर उठा और अंदर चला गया। मैंने कहा कि मैं इतनी देर से इंतज़ार कर रहा था। उन्होंने कहा कि आपने चिट भेजी उसमें अपने को आर. सहाय लिखा है। मैं आर. सहाय को जानता नहीं था। आप कह देते या तो रघुपति सहाय लिख देते या फ़िराक़ लिख देते। यह फ़िराक़ साहब ने लिखा है।

नेहरू की इलाहाबाद से जुड़ी क्या बातें याद आती हैं?

एक बार इलाहाबाद में गोष्ठी हो रही थी। यह याद नहीं है कि नेहरू जी उस समय प्राइम मिनिस्टर हो चुके थे या उसके पहले की बात है। लेकिन गोष्ठी की अध्यक्षता नेहरू जी कर रहे थे। उस समय राहुल जी (महापंडित राहुल सांकृत्यायन) तिब्बत की यात्रा करके आए थे। इस गोष्ठी के संबंध में दो बातें हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में एक शिव प्रसाद शर्मा थे। इतिहास के प्रोफेसर के रूप में उनका ठीक से नाम लिया जाता है। बहुत बड़े प्रोफेसर के रूप में नहीं, लेकिन बहुत दिन तक वह प्रोफेसर रहे थे। उनके छात्र बहुत थे। गोष्ठी में जब राहुल जी का वक्तव्य खत्म हो गया तो उन्होंने राहुल जी के बारे में कहा, 'यह तैरे बहुत हैं, लेकिन कहीं थाह नहीं मिली है।' लोग बताते हैं कि जवाहरलाल नेहरू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा, 'इसलिए थाह नहीं मिली है क्योंकि राहुल सांकृत्यायन आपकी तरह से कुएं में नहीं तैर रहे हैं। वह समुद्र में तैर रहे हैं।' दूसरी बात, राहुल जी ने लिखा है कि नेहरू जी कभी-कभी अपने वेतन से भी लोगों की मदद कर दिया करते थे। तब उनकी तनख्वाह पांच हजार रुपए थी, जो ज्यादा बचती-वचती नहीं थी। यह कमाल की बात है। इस बारे में नेहरू के सचिव मथाई ने खुद लिखा है, जो उनका बड़ा निंदक था। वह कहता था कि मैंने कहा यह बिल लगा लीजिए। वह बिल लगा लीजिए। इसका पैसा मिल जाएगा। इस पर नेहरू ने उसको डांटा। कहा कि मैं इधर-उधर का नहीं, जितना है उतना ही लिखूंगा। बताते हैं कि नेहरू के पास महीने के अंत तक बमुश्किल से कभी एक रुपया-दो रुपया बचता था। बाकी सब खर्च हो जाता था।

अब सुनिए नेहरू जी के पर्सनल फाइनेंसियल हेल्प का किस्सा। राहुल जी कहीं जा रहे थे तो नेहरू ने अपनी किताब राहुल जी को भेंट की। उस किताब में सौ-सौ रुपए के दस नोट अलग अलग रख दिए। यह नहीं कहा कि पैसे आपको दे रहे हैं। किताब दे दी। नेहरू का यह मानवीय रूप बड़ा अजीब है। बड़ा मशहूर किस्सा है कि वह कहीं भाषण देने गए थे और कोई उनके बारे में बोल रहा था। भाषण देने वाले को पकड़कर बोले यह क्या बदतमीजी है। मेरे सामने मेरी तारीफ। शिवमंगल सिंह सुमन ने मुझे एक बार बताया था। मैं एक बार अजय तिवारी के साथ उनसे मिलने उज्जैन गया था। शिवमंगल सिंह सुमन बड़े आदर और प्रेम से मिलते थे। आज ऐसा कोई आदमी नहीं मिलने वाला। होली थी। उन्होंने होली में बनने वाला मीठा समोसा खिलाया। शिवमंगल सिंह सुमन के ड्राइंग रूम में एक चिट लिखी थी 'जिंदगी इतनी खूबसूरत होनी चाहिए जितनी कि कविता।' नीचे लिखा था जवाहरलाल नेहरू। हमने पूछा कि इसका क्या मतलब है, उन्होंने बताया कि एक बार दिल्ली के रामलीला मैदान में हिंदी कवि सम्मेलन में गया था। जो अभी भी होता है। मैंने कवि सम्मेलन में कविता सुनाई 'मुझको मेरा जवाहर दे दो।' कवि सम्मेलन में मिसेज पंडित सुनने आई थीं।

उन्होंने मुझसे कहा, चलिए आप यह कविता भाई को सुनाइए। मिसेज पंडित ले गईं मुझे नेहरू जी के पास। नेहरू जी ने विजय लक्ष्मी पंडित को डांटा। विजय लक्ष्मी पंडित से कहा, 'कविता ऐसे सुनी जाती है। ले आई, कविता सुनाओ। पहले इनको बुलाओ। खाना खिलाओ। उसके बाद कविता सुनी जाती है। अगले दिन फिर बुलाया गया। पहले खिलाया-पिलाया गया। फिर उन्होंने कविता सुनाई। नेहरू जी ने पूछा कि क्या सचमुच आपको लगता है कि मैं बुड्ढा नहीं हूँ। नेहरू ने कहीं कह दिया था कि मैं बूढ़ा हो रहा हूँ। शिवमंगल सिंह सुमन ने इसके विरोध में कविता लिखी, 'कौन कहता है कि तुम बुड्ढे हो गए हो...' उनको अच्छा लगा होगा। सुमन जी ने जब नेहरू से ऑटोग्राफ लिया तो नेहरू ने लिख कर दिया, 'जिंदगी इतनी खूबसूरत होनी चाहिए, जितनी कि कविता।' तुम कल्पना करो कि एक ऐसा आदमी, जो इतना बड़ा नेता हो, खुद इतना खूबसूरत हो, इतना लोकप्रिय हो। हमने कहीं पढ़ा है। मैं नाम नहीं भूल सकता। कोई विदेश की बड़ी मशहूर सुंदरी थी। उससे नेहरू को लेकर पूछा गया था, तो उसने कहा था कि अब नेहरू उतार पर हैं। लेकिन मैं नेहरू से शादी करना चाहती हूँ या कर सकती हूँ। नेहरू से पूछा गया तो नेहरू ने कहा—नहीं। 'आई एम इन द स्पेल ऑफ फाइव इयर प्लांस।' अब मेरे शेड्यूल में शादी करना नहीं है। जो ऐसा आदमी हो और इतना नॉर्मल रहे। नेहरू की पर्सनैलिटी में सबसे बड़ी बात यह है कि वह अपने को दूसरे की तरह ही रखते थे। जब भी कोई चाहे, उनसे मिल ले। जैसे सब थे, वैसे जवाहर लाल नेहरू थे। चाहे खाने पीने के मामले में, चाहे जीवन के मामले में, चाहे किसी अन्य मामले में। एक सच्चा भारतीय जैसा होता है, ठीक वैसे ही नेहरू थे। यह कहना कि अच्छी चीजें मुझे अच्छी लगती हैं। यही जवाहरलाल नेहरू की बड़ी शक्ति थी। पहली बार जब भुवनेश्वर में नेहरू बीमार पड़े हैं तो उस समय चीन का हमला हुआ था। चीन के आक्रमण ने नेहरू को काफी हिला दिया था। लोहिया जी नेहरू का खूब विरोध कर रहे थे। उन दिनों नेहरू ने रेडियो से एक टॉक प्रसारित की थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि वह पहले अंग्रेजी वाला बोल लेते थे और फिर उसका ट्रांसलेशन खुद करते थे। एक्सटमपोर ट्रांसलेशन करके बोलते थे। उस टॉक में एक शब्द आया था चाइना के लिए 'अनस्कुपुलस कंट्री'। उन्होंने जब उसका अनुवाद हिंदी में किया तो दो सेकेंड के लिए रुके हैं। फिर कहा 'बेशर्म मुल्क'। एकदम ठीक अनुवाद। आखिरी समय में जब डॉक्टर उनको देखने आए तो नेहरू ने कहा, आज फिर मैंने आपको तकलीफ दी। मेरा खयाल है यह उनका अंतिम वाक्य था। इसके बाद वह चले गए।

बहुत प्यार किया नेहरू ने भारत को और भारत ने बहुत प्यार किया उनको। अब उसके बाद इतने अच्छे आदमी का सांप्रदायिक ताकतों द्वारा इतना क्रिटिसाइज होना स्वाभाविक लगता है। यह कैसे हो सकता है कि सांप्रदायिक शक्तियां और मोदी साहब

नेहरू को क्रिटिसाइज न करें? जहां यह लोग आजकल सत्ता में बैठकर नेहरू की बुराई करते हैं वहीं जो बाहर के लोग आते हैं वह सब नेहरू-नेहरू-नेहरू करते हैं। जो इनको पसंद नहीं आता। आप इतिहास को बदल नहीं सकते। उससे सीख सकते हैं। इन लोगों में सीखने की शक्ति है ही नहीं। केवल नेहरू को अनलर्न करना चाहते हैं। अनलर्न भी नहीं करना चाहते, उनको धूमिल करना चाहते हैं। ऐसा कैसे संभव है? भारत को जैसा नेता मिलना चाहिए वैसा नेता मिला और नेहरू को जैसी जनता मिलनी चाहिए वैसी जनता मिली। यह इतिहास का एक अखंड सत्य है। मैं समझता हूं कि गांधी को लोग पूजते थे। यह समझते थे कि गांधी जी हमसे ऊपर हैं। लेकिन हमारे यहां नेहरू को लोग कभी-कभी सामने से क्रिटिसाइज कर देते थे। कभी कभी पार्लियामेंट में अभद्र भाषा में क्रिटिसाइज करते थे। नेहरू एक बार बीएचयू गए थे। उनकी आदत थी जब लड़के शोर मचाते तो वह लड़कों के बीच में कूद पड़ते थे। मेरे आंख के सामने की बात है कि साउथ इंडिया वाले लड़के हल्ला मचा रहे थे। नेहरू हिंदी में बोल रहे थे और लड़के अंग्रेजी-अंग्रेजी कह रहे थे। उसी में कुछ शोर-शराबा हुआ तो बीच में ही नेहरू ने किसी लड़के को पकड़कर इधर-उधर बैठाया। एक लड़के ने नेहरू से कहा, 'विल यू विहेव।' 'विल यू विहेव।' मतलब तमीज से बात कीजिए। हमने सामने से कई बार नेहरू को देखा है। वह सब स्मरण है।

नेहरू को मैंने किस रूप में और कैसे देखा। 1954 में जब कुंभ में ट्रेजडी हुई थी उस समय मैं वहीं था। मुझे नहीं पता था कि ट्रेजडी हो गई है। नेहरू जी जीप पर जा रहे थे। चेहरा उनका बिल्कुल उतरा हुआ था। मुझे उनकी वह शक्ल याद है। मैं जब नैनीताल में था तो उस समय नेहरू जी नैनीताल गए थे। मैं गवर्नमेंट कॉलेज में था तो एक प्रोटोकॉल था कि जब वह वहां से जाएं तो हम लोग सड़क किनारे खड़े हो जाएं। एक लड़की थी। उनको माला पहनाना चाहती थी। नेहरू ने उसको गाल पर हल्के से मारा। उसने समझा कि नेहरू ने सच में उसको मारा है। वह जोर से रोने लगी। नेहरू को मैंने कई सुंदर रूपों में देखा है। आजादी के पहले सन 46' में बलरामपुर में बेट्स पार्क में नेहरू का भाषण हुआ था। उसमें मैंने देखा था। वह पतले से थे। तेज चलते थे। नेहरू की चाल बड़ी अकड़ की चाल थी। उस समय मैं घोर आरएसएस वाला था।

सर अटल बिहारी वाजपेयी जी ने नेहरू की मृत्यु के बाद संसद में एक भाषण दिया था...

वह भाषण एक कविता है। उस भाषण ने मेरी निगाह में वाजपेयी को बहुत ऊंचा उठा दिया। वैसा भाषण जो आदमी दे सकता था वह बड़ा आदमी था। क्या भाषण है वह! शायद, वह भाषण अटल बिहारी वाजपेयी की बेस्ट कविता है। वह भाषण हमने सुना है। इसीलिए तो अब भाजपा, आरएसएस वाले अटल बिहारी वाजपेयी को उस तरह याद नहीं करते। वाजपेयी तो नेहरू के अनुयायी थे और वह रिश्ते में भी पड़ते थे।

शायद, राजकुमारी कौल रिश्ते में नेहरू की कुछ लगती थीं। बड़ी सच्ची थीं राजकुमारी कौल। मुझे बहुत मानती थीं। मिसेज कौल जहां देखती थीं, बुलाती थीं। कारण उसका यह था कि वह बलरामपुर की थीं। उनकी शादी बलरामपुर में मिस्टर कौल से हुई थी। मिस्टर कौल मेरी ससुराल के बिल्कुल बगल के थे। यहां मिस्टर कौल साइकोलॉजी विभाग में प्रोफेसर थे। मैं किरोड़ीमल कॉलेज में था और वह भी वहां थीं। जब परिचय हुआ तो पता चला कि अरे यह भी बलरामपुर के हैं। अभी मैं आपको तारीख बता दूंगा। 25 दिसंबर 1976 की शाम 7 बजे की बात है। मैं गया था डॉ. उदय भान सिंह के लड़के को देखने। वह बीमार था। वहां मिसेज कौल मिलीं। बोलीं, तुम यहां क्या कर रहे हो? मैंने बताया। उन्होंने कहा, मेरे साथ चलो। अटल जी यहां डारमेट्री में हैं चौथी फ्लोर पर। आज उनका जन्मदिन है। मैंने कहा कि मैं सीपीआई का आदमी हूं। लेकिन वह नहीं मानीं। मुझे ले गईं। वहां वाजपेयी जी मिले। लुंगी और रंगीन बेस्टकट सदरी पहने रौब में बैठे थे। मेरा खयाल है कि वह मिसेज कौल की छोटी लड़की को खिला रहे थे। मिसेज कौल ने बताया यह विश्वनाथ त्रिपाठी हैं बलरामपुर के। यह हैं तो आपकी विरोधी पार्टी के। मैंने कहा अटल जी से, मैं आपसे मिला हूं। मैं जब तीन महीने तक लखनऊ सेंट्रल जेल में था तब रिलीज होने के समय आप आए थे। कहा, हां-हां-हां। फूल गए हो तुम। माने मोटे हो गए हो। बैठो-बैठो। फिर मैंने उनसे स्वास्थ्य के बारे में पूछा। वह हंसे। बोले, बाहर यही लोग कह रहे हैं न कि मैं बीमार हूं। मैंने कहा, हां कह तो रहे हैं लोग। इस पर बोले, मेरा ऑपरेशन हुआ है। इंदिरा जी ने खुद अपना आदमी भेजा था। उसी की देखरेख में हुआ है। उनका आदमी हर हफ्ते आकर खबर ले जाता है। हमने पूछा, आप कब से हैं यहां? बोले, शताब्दियां गुजर गईं साहब। अटल जी से इतनी सी बात हुई। लेकिन जब वह जेल से छूटकर आए। फिर तो बड़े आदमी हो गए। उसके बाद कई बार आमने-सामने से देखा-देखी हुई। मैं लपककर उनसे मिला नहीं। वाजपेयी जी उतने सरल नहीं थे, जितने दिखाई पड़ते थे। पता नहीं, मुझे शक होता है कि मिसेज कौल मुझे जो लेकर गईं वह उनको अच्छा नहीं लगा। मुझे ऐसा लगता है। मिसेस कौल बहुत अच्छी थीं। रूपवती थीं। पर्सनैलिटी बड़ी अच्छी थी। रास्ते भर मुझसे कहती गईं कि मेरा संबंध अटल जी से बिल्कुल भाई-बहन का है। मैं मन ही मन हंसने लगा। उनसे कुछ कहा नहीं। मैं उनको क्या जवाब देता। मैं समझ गया कि यह सभी कहते हैं। भाई-बहन, भाई-बहन।

नेहरू के बारे में एक किस्सा और सुनाता हूं। फिल्मकार वी. शांताराम बड़ी तगड़ी पर्सनैलिटी थे। 'दो आंखें बारह हाथ' 'पड़ोसी', 'मैं अबला नहीं हूं' और 'अछूत कन्या' जैसी फिल्में शांताराम ने बनाई थीं। शांताराम की फिल्म में काम करना बड़े से बड़ा अभिनेता अपना गौरव समझता था। वह दो-ढाई सौ रुपए देते थे। शांताराम मराठी कल्चर से जुड़े हुए थे। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू के भाषणों पर आधारित पहली फिल्म बनाई

थी-'डॉक्टर कोटनीस की अमर कहानी'। उस समय चाइना में एक इंडियन डॉक्टर था, जो चाइना-जापान की लड़ाई में चाइना की सहायता करने गया था। वह डॉक्टर नेहरू जी का भाषण सुनकर गया था। वहां उसने एक चाइनीज से शादी की। आगे चलकर वहीं उसकी मौत हो गई। उसी स्टोरी पर शांताराम ने फिल्म बनाई थी। उस डॉक्टर का नाम था कोटनीस। इस मामले में बड़ा एक्सपेरिमेंटलिस्ट थे शांताराम। उधर घटनाएं हुईं और इधर फिल्म उन्होंने बना दी। शांताराम ने नेहरू को फिल्म के प्रीमियर में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया। नेहरू ने जाने से मना कर दिया। शांताराम ने पूछा क्यों नहीं शामिल होंगे, नेहरू ने कहा, आप मार्केटिंग कर रहे हैं। मैं इसका हिस्सा नहीं बनूंगा। यह नेहरू की नैतिकता थी। कार्टूनिस्ट शंकर के कार्टून का मामला भी ऐसा ही था। नेहरू देविका रानी के फैन थे। वह बहुत पहले 'अछूत कन्या' फिल्म देखकर देविका रानी से मिलने गए, पर वह मिली नहीं। वह कहीं गई हुई थीं। आगे चलकर नेहरू ने उनको एवार्ड दिया। इस तरह का था नेहरू का व्यक्तित्व। नेहरू पर लिखा तो गया है, लेकिन नेहरू के काम का दायरा और व्यक्तित्व इतना बड़ा है कि उन पर और लिखा जाना चाहिए।

सर, इस बीच 'उद्भावना' और 'मधुमती' पत्रिका का नेहरू पर अंक आया है। कई किताबें, जैसे- पीयूष बबेले की 'नेहरूः मिथक और सत्य', पुरुषोत्तम अग्रवाल ने लम्बी भूमिका के साथ नेहरू के निबन्धों का संपादन 'हू इज भारत माता?' के नाम से किया है। वह हिंदी में भी 'कौन हैं भारत माता?' शीर्षक से प्रकाशित हो गई है। सुधीर विद्यार्थी की 'नेहरू और क्रांतिकारी', पंकज चतुर्वेदी की 'जवाहरलाल हाजिर हों' और शुभनीत कौशिक, रमाशंकर सिंह द्वारा संपादित 'नेहरू का भारत' किताबें प्रकाशित हुई हैं। इस बीच नेहरू पर जो लगातार हमले किए गए या किए जा रहे हैं उसने नेहरू को एक बार फिर बड़े पैमाने पर चर्चा में ला दिया है, इसे आप कैसे देखते हैं?

हां, नेहरू पर इस तरह के काम होना अच्छी बात है। पत्रिकाओं के अंक निकलना और किताबें आना महत्वपूर्ण है। नेहरू पर अशोक कुमार पांडे बढ़िया बोलता है। पुरुषोत्तम अग्रवाल का भी नेहरू पर महत्वपूर्ण काम है। बाई चांस मैंने इस बार 'तद्भव' पत्रिका के लिए अखिलेश को नेहरू पर संस्मरण भेज दिया है। कुछ मित्रों ने बताया है कि यह पत्रिका के 50वें अंक में प्रकाशित हो गया है।

सम्पर्क :

1. *अटल तिवारी, द्वितीय तल, कमरा नंबर 203, 352-ई/4/ई, मुनिरका, नई दिल्ली-110067, मो. 9868325191*
2. *बिपिन तिवारी, हिन्दी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा-403206, मो. 9130570121*